कार्यालय जिला पंचायत (ग्रामीण विकास) छिंदवाड़ा (म.प्र.)

सफलता की कहानी

मजदूरी के लिए विजय अब नहीं जाता नरसिंहपुर

कपिलधारा कूप से आत्मनिर्भर बना आदिवासी परिवार

हर वर्ष मजदूरी की तलाश में नरसिंहपुर जाने वाला विजय अब अपने ही खेत में काम करता है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीम की कपिलधारा उपयोजना में बने कुएं ने एक आदिवासी परिवार को पूरी तरह आत्मनिर्भर बना दिया है। कुंए में भरपूर पानी लगने से अब आदिवासी परिवार सभी फसल ले रहा है। हर्रई विकासखंड की ग्राम पंचायत साठिया निवासी दहलान पिता सुमरत पाल ने खेत में कपिलधारा उपयोजना के तहत वर्ष 2007–08 में कूप निर्माण कराया गया है।

सरपंच नन्हेलाल उईके ने बताया कि एक लाख तीन हजार रूपए की लागत से दहलान के खेत में कूप निर्माण का कार्य कराया गया, जिससे गांव के 8–9 मजदूरों को रोजगार भी मिला। दहलान ने भी अपना कुआं बनाने के लिए मजदूरी की। कुएं में भरपूर पानी लगने से अब यह परिवार पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया। अब पूरी फसलें ले सकेगा। हितग्राही दहलान ने बताया कि खेत में सिंचाई का स्रोत नहीं होने के कारण सिर्फ बारिश की फसल ही ले पाते थे। कुआं बनने से अब सालभर की फसल लेने लगे है। गतवर्ष ही लगभग 10 क्विंटल गेहूं और सब्जी–भाजी इस खेत में उत्पादित की गई। हर्रई के बाजार में कम से कम 5 हजार रूपए की सब्जी अभी तक बेच दी है। अब खाने के लिए गेहूं भी नहीं खरीदना पड़ता है। 40–45 फीट गहरे कुंए में अब बारह महीने पानी भरा रहता है। डेढ़ हेक्टेयर जमीन पर हमेशा फसल लहलहाती है। मोटर पंप होने के कारण सिंचाई की भी कोई समस्या नहीं है।

दहलान के पुत्र विजय ने बताया कि पहले खेत में पानी नहीं होने से कोई काम नहीं रहता था। आधा साल खेत विरान पड़े रहते थे। ऐसी स्थिति में मजदूरी की तलाश में समीपी जिला नरसिंहपुर जाना पड़ता था। 3–4 माह मजदूरी करने के बाद जो रूपए और अनाज मिलता था, उसी से परिवार की रोजी–रोटी चलती थी। कुएं में पानी लगने से अब न तो दूसरों के यहां काम पर जाना पड़ता है और न ही अनाज और रूप्ए के लिए किसी

पर निर्भर रहना पड़ता है। अब खुद का खेत ही भरपूर फसल दे रहा है। अब दूसरे लोगों को अपने खेत में काम देने लगे है और खुद भी पूरे समय अपने ही खेत में काम करता हूं। पिता और अन्य भाई भी जो दूसरों के यहां मजदूरी करते थे, अब अपने ही खेत में काम करते है। भरपूर अनाज और सब्जी इस कुंए से उत्पादित होने लगी है। परिवार की वार्षिक आय भी बढ़ी है। पहले मजदूरी और बरसाती फसल से जैसे–तैसे गुजारा होता था, अब बचत भी होने लगी है। एकमात्र कूप ने हमारे परिवार को पूरी तरह आत्मनिर्भर बना दिया है।

इस निर्माण के बाद दहलान ने अपने खेत में भूमिशल्प योजना के अंतर्गत मेढ़बंधान का कार्य भी कराया है। जिससे भूमि कटाव नहीं होता और फसल भी सुरक्षित रहती है। वर्ष 2008–09 में 17 हजार 900 रूपए की लागत से मेढ़बंधान कार्य कराया गया था।